# काड़ो–कुइली

# KARO-KOELI

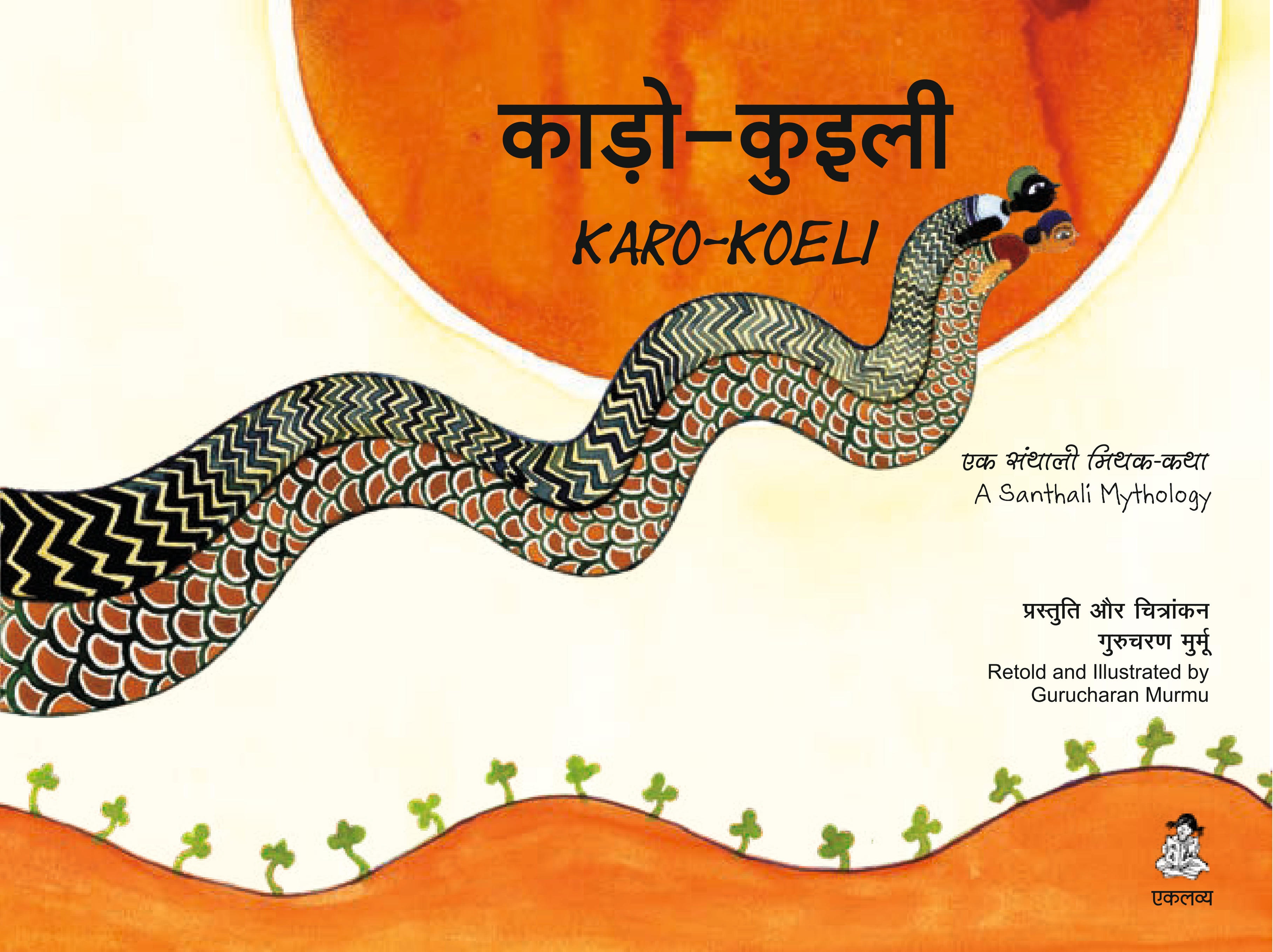

एक संथाली मिथक-कथा

A Santhali Mythology

प्रस्तुति और चित्रांकन
गुरुचरण मुर्मू

Retold and Illustrated by
Gurucharan Murmu

एकलव्य

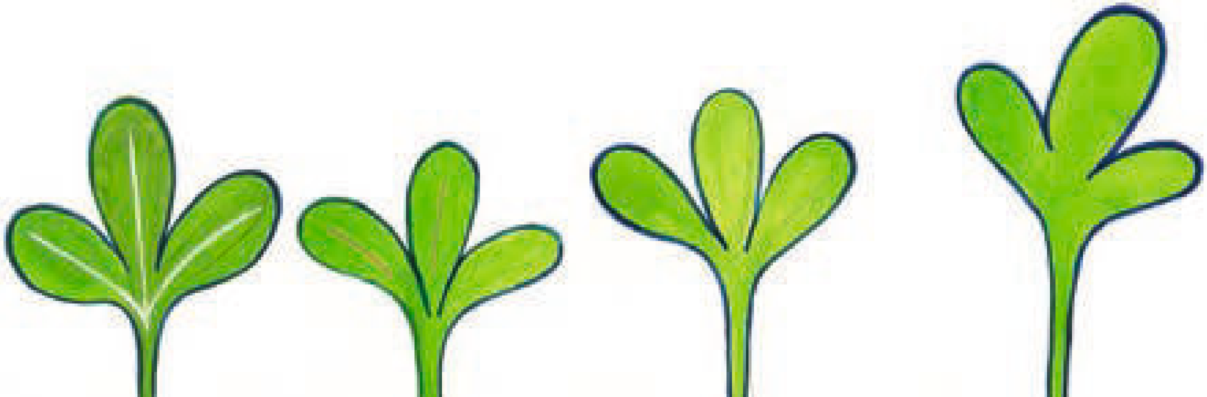

# काड़ो–कुइली

## KARO-KOELI

एक संथाली मिथक-कथा
A Santhali Mythology

प्रस्तुति और चित्रांकन
गुरुचरण मुर्मू
Retold and Illustrated by
Gurucharan Murmu

एकलव्य का प्रकाशन

मेरी बहनों के लिए...
For my sisters...

# काड़ो-कुइली / KARO-KOELI

*दो नदियों की कहानी / A tale of two rivers*

एक संथाली मिथक-कथा / A Santhali Mythology

**प्रस्तुति और चित्रांकनः** गुरुचरण मुर्मू
Retold and Illustrated by Gurucharan Murmu
अँग्रेज़ी से अनुवादः सीमा

गुरुचरण मुर्मू, मई 2016
इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों से मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

मई 2016 / 3000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो और 210 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
ISBN: 978-93-85236-08-2
मूल्यः ₹ 50.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोनः + 91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आदर्श प्राइवेट लि, भोपाल, फोनः + 91 755 255 5442

इस किताब में उपयोग किया गया कागज़ जंगल-मुक्त नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

एक समय की बात है, काड़ो और कुइली नाम के भाई-बहन थे। उनके माता-पिता नहीं थे। वे अपने मामा और मामी के साथ रहते थे।

Once upon a time there lived a brother and sister named Karo and Koeli. They were orphans and lived with their Mama and Maami.

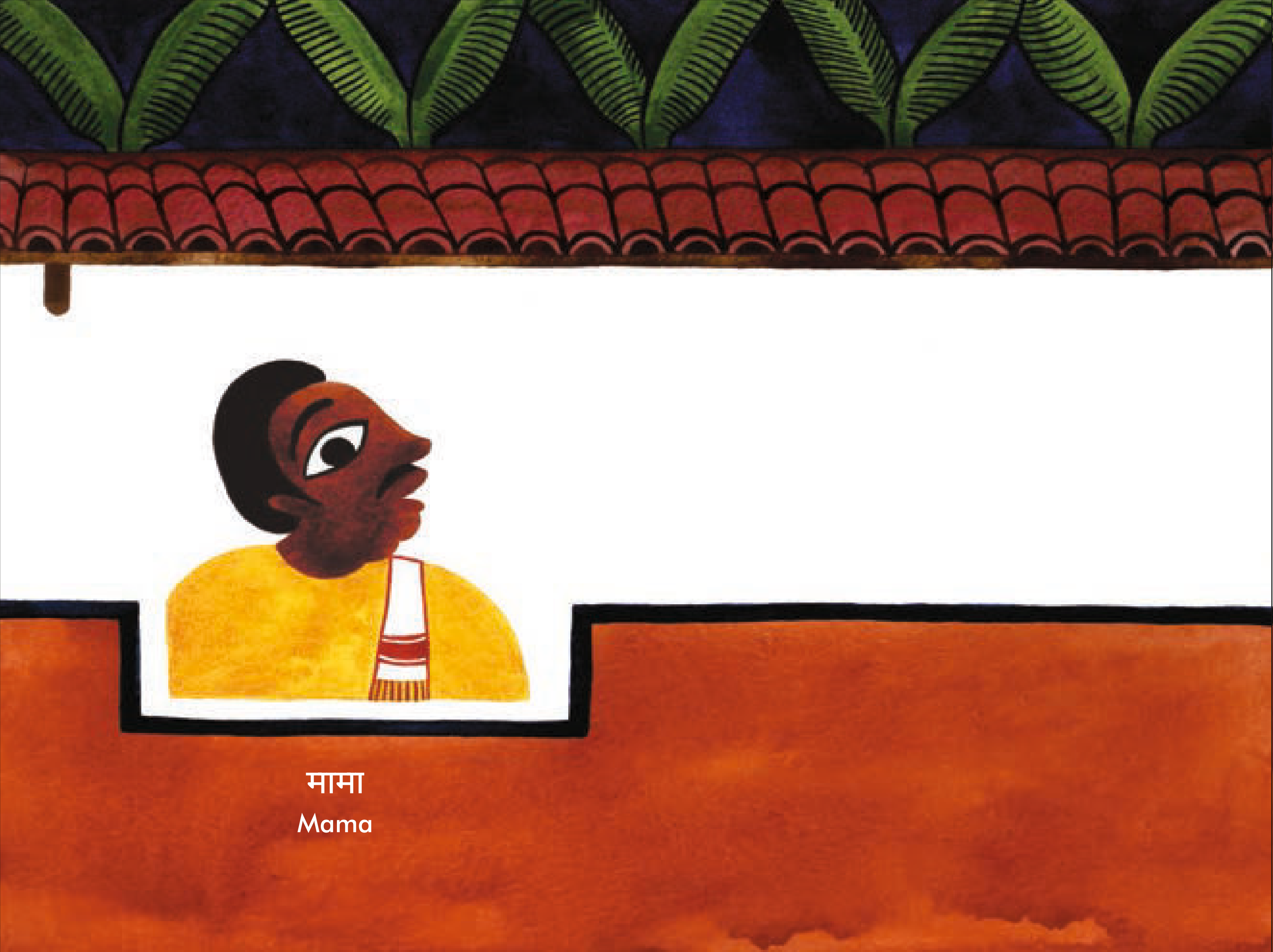

मामा

Mama

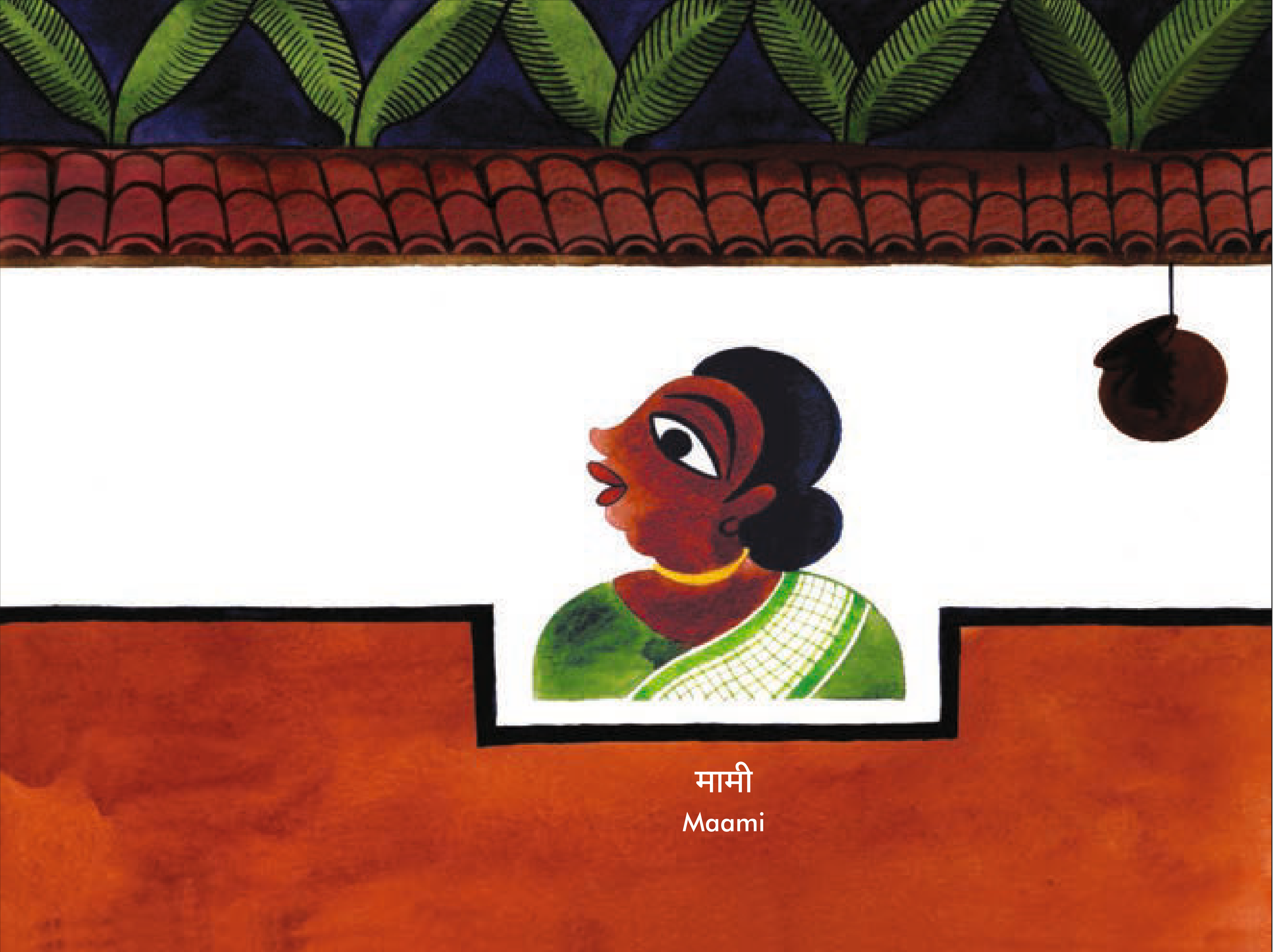

मामी

Maami

गोम्हा उत्सव का दिन था।

It was the day of Gomha festival.

मामा दावत के लिए मुर्गा खरीदने बाज़ार गए हुए थे।

Mama went to the market to buy a chicken for the feast.

मामा ने एक मुर्गा खरीद लिया।

Mama bought a chicken.

मामी काड़ो और कुइली को बिलकुल पसन्द नहीं करती थी। वो हमेशा उन्हें परेशानी में डालने की कोशिश करती रहती थी। इसलिए उसने उन्हें खेत में काम करने के लिए भेज दिया, “जाओ और खेत में जाकर काम करो!”

Maami did not like Karo and Koeli at all. She always tried to make trouble for them. So she sent them off to work in the field. “Go and work in the field.”

वे खेत की ओर चल दिए।

They set off to the field.

चन्दो बोंगा (सूरज) उन्हें गोम्हा उत्सव के शुभ दिन भी खेत में काम करते हुए देख रहा था। उसने उनसे पूछा, “तुम आज के दिन काम क्यों कर रहे हो?”

Chando Bonga (sun) was watching them work in the field on the auspicious day of Gomha. He asked, “Why are you working today?”

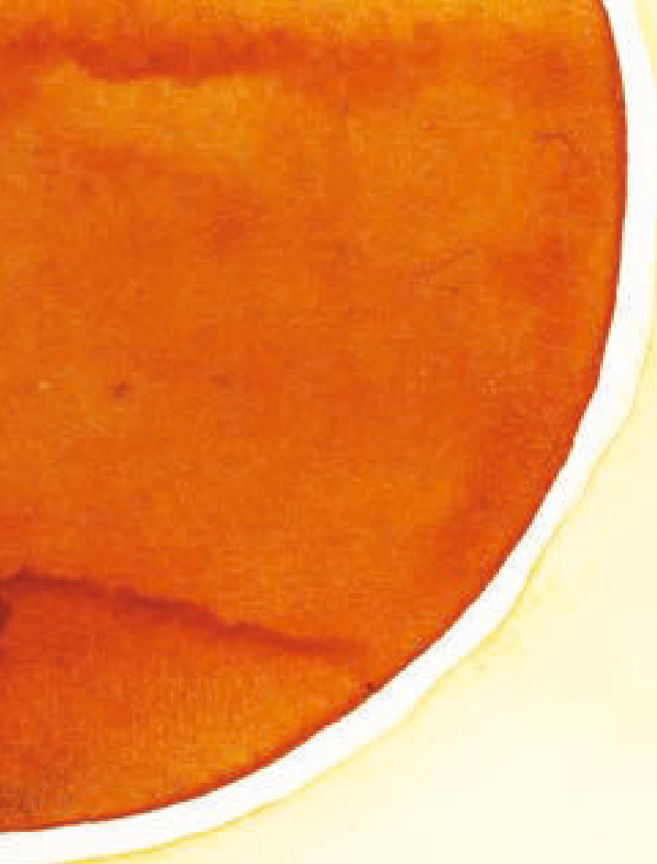

उन्होंने उसे अपनी मामी के बारे में बताया, कि वो उन्हें पसन्द नहीं करती
थी और इसलिए गोम्हा के दिन भी काम करने भेज दिया।

They then narrated the story about their Maami who did not like them and had sent them to work on the day of Gomha.

उनकी दास्तान सुनकर चन्दो बोंगा ने उन्हें वरदान दिया। उनकी परेशानियाँ दूर करने के लिए उसने उन्हें साँप में बदल दिया।

Chando Bonga listened to their story and gave his blessings. He transformed them into snakes to set them free from their troubles.

मामा ने बाज़ार से लौटने पर मामी से पूछा, “भगना-भगनी कहाँ हैं?”

Mama returned from the market and asked Maami, “Where are Bhagna-Bhagni?”

“वे खेत में काम कर रहे हैं।”

“They are working in the field.”

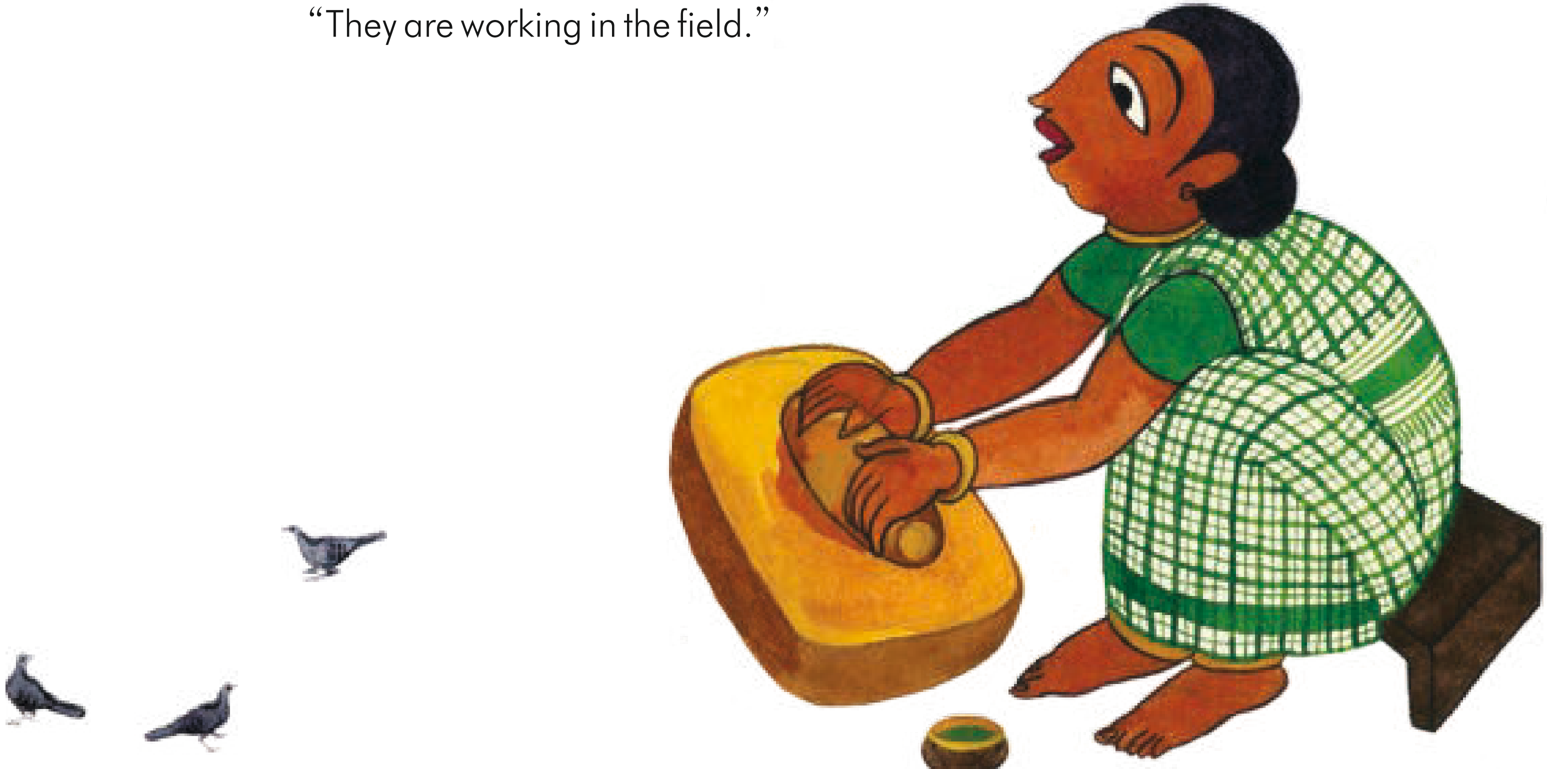

सूरज ऊपर चढ़ आया था और काड़ो और कुइली का कोई अता-पता नहीं था। मामा को बहुत बेचैनी हो रही थी। वे उन्हें ढूँढने के लिए निकल पड़े। "अरे-अरे! क्या हुआ?"

The sun rose to the top of the sky but there was no trace of Karo and Koeli. Mama was feeling very uneasy and he went off to look for them. "Oh dear! What happened?"

मामा से आखिरी मुलाकात के बाद वे देवस्थल की ओर चल दिए।

After this last meeting with Mama, they departed and went towards the shrine of god.

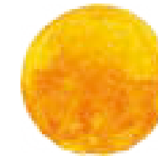

और फिर काड़ो और कुइली के कदमों के निशान ने नदियों का रूप ले लिया। इन दो नदियों के जन्म के बारे में यही कहानी कही जाती है।

And the trails of Karo and Koeli transformed into rivers. This is said to be the story of the origin of these two rivers.

काड़ो और कुइली नदियों का काल्पनिक चित्र

राँची
सरांडा जंगल
मनोहरपुर
काड़ो
गुआ
नोआमुण्डी

नानी, इस सुन्दर कहानी के लिए शुक्रिया।

Thank you Naani, for this beautiful tale.

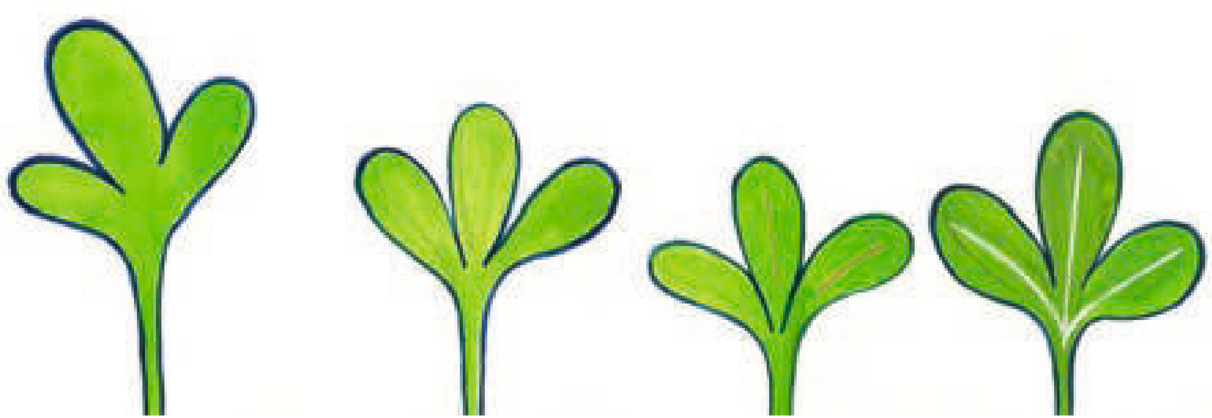

नदियों की भी अपनी कोई न कोई कहानी होती है। काड़ो और कुइली झारखण्ड में बहने वाली ऐसी ही दो नदियाँ हैं। ये संथाली मिथक-कथा इन दोनों नदियों के बनने के घटनाक्रम को बयाँ करती है।

एकलव्य

parag
AN INITIATIVE OF THE TATA TRUSTS

मूल्यः ₹ 50.00

9 789385 236082